

क़ानून हर युग व स्थान में मौजूद नहीं होता। वह अकेले क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी समस्याओं के निपटारे के लिए पर्याप्त नहीं है। अधिकांश इंसानों के काम क़ानून एवं लोगों की आँखों में धूल झोंककर अंजाम पाते हैं।

धर्म की आवश्यकता को बयान करने के लिए यह प्रमाण ही पर्याप्त है कि इतनी बड़ी संख्या में धर्म पाए जाते हैं, जिसकी शरण धरती के अधिकांश समुदाय लेते हैं, ताकि वो उनके जीवन को संगठित करें और इस धरती पर पाए जाने वाले समुदायों के कामों को धार्मिक क़ानूनों की बुनियाद पर व्यवस्थित करें। जैसा कि हम जानते हैं कि क़ानून की अनुपस्थिति में इंसान को व्यवस्थित करने वाली एक मात्र चीज़ उसका धार्मिक विश्वास है। हर समय एवं हर जगह इंसान के साथ क़ानून का पाया जाना संभव नहीं है।

इंसान के लिए एकमात्र प्रतिबंधक तथा प्रतिरोधक उसके ऊपर एक पहरेदार और एक हिसाब लेने वाले की उपस्थिति के बारे में उसका आंतरिक विश्वास है। वास्तव में यह विश्वास उसके सीने के अंदर दफ़न होता है। जब वह कोई ग़लत काम करने के लिए सोचता है तो यह विश्वास स्पष्ट रूप से सामने आता है। उस समय उसके अंदर मौजूद अच्छाई एवं बुराई की क्षमताएँ लड़ती हैं और वह बुरे काम या हर ऐसे काम को लोगों से छुपाने की कोशिश करता है, जिसे अपरिवर्तित स्वभाव नकारता है। यह सब कुछ मानव जाति के दिल की गहराई में धर्म के अर्थ एवं विश्वास के अस्तित्व की हकीकत का प्रमाण है।

धर्म उस रिक्त स्थान को भरने के लिए आया है, जिसे मानव निर्मित क़ानून भर नहीं सकते या समय तथा स्थान की भिन्नता के साथ दिमागों एवं दिलों को व्यवस्थित कर नहीं सकते।

इंसान के अंदर अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करने वाली चीज़ एक-दूसरे से भिन्न होती है। कोई काम करने, नैतिक मूल्यों या निर्धारित आचरणों को अपनाने के पीछे हर व्यक्ति के अपने उद्देश्य और खास फ़ायदे होते हैं। उदाहरण स्वरूप :

सज़ा : कभी-कभी यह इंसान को दूसरे के साथ बुरा करने से रोकती है।

प्रतिफल : कभी-कभी यह इंसान को अच्छा काम करने पर उभारता है।

आत्म संतुष्टि : कभी-कभी इंसान की आत्म संतुष्टि ही उसकी वासनाओं एवं ख्वाहिशों से नियंत्रित करती है। इंसान का एक मूड और मनोदशा होती है। आज जो उसे पसंद है, हो सकता है कल नापसंद हो।

धार्मिक प्रतिबंधक : इसका मतलब है अल्लाह का ज्ञान, उसका डर और इंसान जहाँ भी जाए अल्लाह के अस्तित्व का एहसास। यह बहुत मजबूत और प्रभावी प्रेरणा है [42]

www.alnajat.org

सकारात्मक या नकारात्मक रूप से लोगों की भावनाओं और ख़यालों को हरकत देने में धर्म का बहुत

प्रभाव है। यह हमें बताता है कि लोगों का मूल स्वभाव अल्लाह की जानकारी पर आधारित है। बहुत बार जान-बूझकर या अनजाने में इनसान को उकसाने के लिए इसका दुरुपयोग भी होता है। इससे पता चलता है कि इनसान के बोध के संबंध में धर्म बहुत ही महत्वपूर्ण है, इसलिए कि मामला सृष्टिकर्ता से संबंधित है।

ଓଡ଼ିଆ ଚିଠି ଠିକଣା ବା ଚିଠିଘର

ଠିକଣା: 2030.2026/03/09/34/16/

ଠିକଣା ଠିକଣା: 2030.2026/03/09/34/16/

22 03 2026 03:09:34